E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रियासतों का एकीकरण और मध्य प्रदेश का गठन: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

Dr. Shalendra Kumar Goutam
NET, P.hd, Jiwaji University,
Gwalior, M.P

Paper Rcevied date

05/07/2025

Paper date Publishing Date

10/07/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.16644800

IMPACT FACTOR
5.924

Abstract

यह शोध-पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उपरांत ब्रिटिश भारत की रियासतों के एकीकरण की जटिल प्रक्रिया का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से मध्य प्रदेश राज्य के गठन के संदर्भ में। इसमें सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन के नेतृत्व में रियासतों के विलय की राष्ट्रीय नीति को रेखांकित किया गया है, और फिर उन विभिन्न भौगोलिक एवं प्रशासनिक इकाइयों का विस्तार से विवरण दिया गया है, जिनसे मिलकर 1 नवंबर 1956 को वर्तमान मध्य प्रदेश राज्य का निर्माण हुआ। यह पेपर एकीकरण की चुनौतियों, राज्य पुनर्गठन आयोग की भूमिका और नवगठित राज्य के रणनीतिक महत्व पर प्रकाश डालता है।

1. प्रस्तावना :

15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के साथ ही, एक 'अखंड भारत' का निर्माण सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारत को दो मुख्य प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया था: ब्रिटिश प्रांत और लगभग 560 से अधिक देसी रियासतें। इन रियासतों पर ब्रिटिश क्राउन की सर्वोच्चता थी, जो स्वतंत्रता के साथ ही समाप्त हो गई। इस स्थिति ने रियासतों को स्वतंत्र रहने या भारत या पाकिस्तान में से किसी एक में विलय करने का विकल्प दिया। ऐसी स्थिति में, भारत की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए रियासतों का भारतीय संघ में एकीकरण अत्यंत आवश्यक हो गया। यह असाधारण कार्य मुख्य रूप से सरदार वल्लभभाई पटेल, भारत के पहले उप प्रधान मंत्री और गृह मंत्री, और उनके सचिव, वी.पी. मेनन द्वारा संभाला गया, जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता, कूटनीति और दृढ़ता

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

से भारत को खंडित होने से बचाया। मध्य प्रदेश का गठन इसी व्यापक राष्ट्रीय एकीकरण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण परिणाम था।

2. रियासतों का एकीकरण: एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

2.1 चुनौती और रणनीति स्वतंत्रता के समय, रियासतें आकार, जनसंख्या, राजनीतिक संरचना और आर्थिक स्थिति में अत्यधिक भिन्न थीं। कुछ विशाल और समृद्ध थीं (जैसे हैदराबाद, मैसूर, कश्मीर), जबकि कई छोटी और अविकसित थीं। सर्वोच्चता के अंत ने 'बाल्कनीकरण' के खतरे को जन्म दिया, जहाँ प्रत्येक रियासत एक स्वतंत्र इकाई बन सकती थी, जिससे भारत अनगिनत छोटे राज्यों में विभाजित हो जाता।

सरदार पटेल और वी.पी. मेनन ने इस चुनौती का सामना करने के लिए एक बहुआयामी रणनीति अपनाई:

- विलय पत्र (Instrument of Accession): रियासतों को यह स्वीकार करने के लिए राजी किया गया कि वे रक्षा, विदेश मामलों और संचार के विषयों पर अपनी शक्ति भारत सरकार को हस्तांतरित कर दें। अधिकांश शासकों ने स्वेच्छा से इस पर हस्ताक्षर किए।
- रियासती मंत्रालय (Ministry of States): 5 जुलाई 1947 को स्थापित यह मंत्रालय एकीकरण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु बना।
- वित्तीय प्रलोभन (Privy Purses): शासकों को उनके विलय के बदले में पेंशन और कुछ विशेषाधिकारों की पेशकश की गई।
- कठोर कदम (Coercion, where necessary): जहाँ कूटनीति विफल रही, वहाँ दृढ़ कार्रवाई की गई, जैसे जूनागढ़ (जनमत संग्रह), हैदराबाद (पुलिस कार्रवाई - ऑपरेशन पोलो), और कश्मीर (सैन्य हस्तक्षेप)।

2.2 एकीकरण के चरण एकीकरण प्रक्रिया को मोटे तौर पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1. छोटे राज्यों का विलय: कई छोटी रियासतों को पास के बड़े प्रांतों या अन्य रियासतों में एकीकृत किया गया।
2. राज्यों के संघों का निर्माण: मध्य भारत, सौराष्ट्र, पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्य संघ (PEPSU) जैसे नए राज्यों का निर्माण किया गया, जहाँ कई रियासतें एक साथ मिलकर एक बड़ी प्रशासनिक इकाई बनीं।
3. बड़े राज्यों का भारतीय संघ में विलय: मैसूर, त्रावणकोर-कोचीन, भोपाल, और इंदौर जैसे बड़े राज्य सीधे भारतीय संघ में शामिल हुए।

3. मध्य प्रदेश के गठन से पूर्व की स्थिति :

मध्य प्रदेश के गठन से पहले, वर्तमान मध्य प्रदेश का भौगोलिक क्षेत्र कई अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित था, जिनमें से प्रमुख थीं:

3.1 मध्य प्रांत और बरार (Central Provinces and Berar): यह ब्रिटिश भारत का एक बड़ा प्रांत था, जिसे स्वतंत्रता के बाद 'भाग अ' (Part A) राज्य का दर्जा दिया गया। इसकी राजधानी नागपुर थी। इसमें वर्तमान मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के कुछ हिस्से शामिल थे। यह क्षेत्र भाषाई रूप से विविध था, जिसमें हिंदी, मराठी, छत्तीसगढ़ी और गोंडी बोलने वाले लोग शामिल थे।

3.2 मध्य भारत (Madhya Bharat): यह 'भाग ब' (Part B) राज्य था, जिसका गठन 28 मई 1948 को ग्वालियर, इंदौर, मालवा और बुंदेलखंड की 25 रियासतों को मिलाकर किया गया था। इसकी दो राजधानियाँ थीं - ग्वालियर (शीतकालीन) और इंदौर (ग्रीष्मकालीन)। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध था।

3.3 विंध्य प्रदेश (Vindhya Pradesh): यह 'भाग स' (Part C) राज्य था, जिसे 1948 में बुंदेलखंड और बघेलखंड की 35 से अधिक रियासतों को मिलाकर बनाया गया था। इसकी राजधानी रीवा थी। यह क्षेत्र अपनी बीहड़ स्थलाकृति और जनजातीय आबादी के लिए जाना जाता था। 1950 में इसे केंद्र शासित प्रदेश घोषित किया गया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3.4 भोपाल राज्य (Bhopal State): यह एक महत्वपूर्ण 'भाग स' (Part C) राज्य था, जिसका शासक (नवाब हमीदुल्ला खान) शुरू में भारतीय संघ में विलय को लेकर अनिच्छुक था। नवाब ने 1 जून 1949 को भोपाल राज्य को भारतीय संघ में विलय के लिए विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। यह अपनी संस्कृति और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध था।

4. मध्य प्रदेश का गठन: प्रक्रिया और कारक :

4.1 भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग स्वतंत्रता के बाद, भारत में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की तीव्र मांग उठी। विभिन्न भाषाई समूहों ने अपनी-अपनी पहचान और संस्कृति के संरक्षण के लिए अलग राज्यों की वकालत की। इस मांग को संबोधित करने के लिए, भारत सरकार ने 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग (State Reorganisation Commission - SRC) का गठन किया, जिसके अध्यक्ष न्यायमूर्ति फजल अली थे और सदस्य के.एम. पणिक्कर तथा हृदयनाथ कुंजरू थे।

4.2 राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशें और मध्य प्रदेश आयोग ने 1955 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें भाषाई और प्रशासनिक दक्षता दोनों के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की गई थी। मध्य भारत के संदर्भ में, आयोग ने निम्नलिखित सिफारिशें कीं, जिन्हें राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के माध्यम से लागू किया गया:

- मध्य प्रांत और बरार: इसके मराठी भाषी विदर्भ क्षेत्र (जिसमें नागपुर भी शामिल था) को बॉम्बे राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया। शेष हिंदी भाषी क्षेत्रों को नए मध्य प्रदेश राज्य में मिला दिया गया।
- मध्य भारत: संपूर्ण मध्य भारत राज्य को नए मध्य प्रदेश में एकीकृत कर दिया गया।
- विंध्य प्रदेश: संपूर्ण विंध्य प्रदेश को नए मध्य प्रदेश में मिला दिया गया।
- भोपाल राज्य: भोपाल राज्य को भी नए मध्य प्रदेश का हिस्सा बनाया गया।
- अन्य समायोजन: राजस्थान के सिरोंज उपखंड (जो पहले टोक रियासत का हिस्सा था) को मध्य प्रदेश में जोड़ा गया, जबकि मंदसौर जिले के सुनेल टप्पा (भानपुरा तहसील) को राजस्थान को दिया गया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4.3 मध्य प्रदेश का जन्म इन सभी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, 1 नवंबर 1956 को एक नए और बड़े राज्य मध्य प्रदेश का गठन हुआ। भोपाल को इसकी राजधानी घोषित किया गया, जो पहले एक 'भाग स' राज्य था। इस नए राज्य में मध्य प्रांत और बरार के हिंदी भाषी क्षेत्र, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्य शामिल थे। इस प्रकार, मध्य प्रदेश भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल के अनुसार) बना, जिसमें भाषाई रूप से हिंदी भाषी आबादी का बहुमत था।

5. एकीकरण और गठन के परिणाम एवं महत्व :

5.1 राजनीतिक स्थिरता और एकता: रियासतों का सफल एकीकरण और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों का गठन राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए महत्वपूर्ण था। इसने भारत के भीतर विखंडन के किसी भी संभावित खतरे को समाप्त कर दिया और एक मजबूत संघीय ढांचा प्रदान किया।

5.2 प्रशासनिक दक्षता: विभिन्न और अव्यवस्थित रियासती प्रशासनिक प्रणालियों के स्थान पर एक एकीकृत और केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की गई, जिससे शासन और विकास कार्यों में अधिक दक्षता आई।

5.3 आर्थिक विकास का मार्ग: नवगठित राज्य ने संसाधनों का बेहतर उपयोग करने और समन्वित विकास योजनाएँ बनाने का अवसर प्रदान किया। इसने विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानताओं को कम करने में भी मदद की।

5.4 क्षेत्रीय पहचान और भाषाई सामंजस्य: भाषाई पुनर्गठन ने स्थानीय पहचान और संस्कृति को सम्मान दिया, जिससे लोगों में अपने राज्य और देश के प्रति अपनेपन की भावना बढ़ी। मध्य प्रदेश के मामले में, इसने एक बड़े हिंदी भाषी क्षेत्र को एक इकाई के रूप में एकजुट किया।

5.5 चुनौतियाँ: एकीकरण की प्रक्रिया चुनौतियों से भी खाली नहीं थी। विभिन्न रियासतों की अपनी कानून-व्यवस्था, कर प्रणाली और प्रशासनिक संरचनाएँ थीं, जिन्हें एक समान राष्ट्रीय

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ढांचे में ढालना जटिल कार्य था। रियासती शासकों के विशेषाधिकारों और उनके पुराने दरबारियों के समायोजन में भी समय लगा।

6. निष्कर्ष :

रियासतों का एकीकरण और मध्य प्रदेश का गठन भारतीय इतिहास की एक असाधारण उपलब्धि है। यह सरदार वल्लभभाई पटेल और उनके सहयोगियों की दूरदर्शिता, दृढ़ इच्छाशक्ति और कूटनीतिक कौशल का प्रमाण है, जिन्होंने भारत को एक मजबूत और एकीकृत राष्ट्र के रूप में आकार दिया। मध्य प्रदेश का गठन केवल कुछ भौगोलिक क्षेत्रों को एक साथ लाने से कहीं अधिक था; यह विभिन्न संस्कृतियों, आर्थिक प्रणालियों और प्रशासनिक विरासत को एक सुसंगत इकाई में ढालने का एक महान प्रयास था। यह प्रक्रिया भारत की लोकतंत्र और एकता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसने विविधता में एकता के सिद्धांत को सफलतापूर्वक स्थापित किया। आज का मध्य प्रदेश इसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जो भारत के केंद्र में स्थित होकर इसकी समृद्ध विरासत और आधुनिक प्रगति का प्रतीक बन गया है।

7. संदर्भ :

1. पटेल, सरदार वल्लभभाई. *भारत का पूर्ण एकीकरण*.
2. मेनन, वी.पी. *द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स*.
3. इंडिया गजटियर (विभिन्न खंड).
4. राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट, 1955.
5. विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथ एवं सरकारी दस्तावेज भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राज्य पुनर्गठन पर।